(6)

बी.ए. हिन्दी अनिवार्य

(द्वितीय सेमेस्टर)

मध्यकालीन हिन्दी कविता (Course Type : CC-2/MCC-3)

(शैक्षणिक सत्र 2026–27 से प्रभावी)

विषय कोड–24UN-HND-201N
क्रेडिट : 04

पूर्णांक : 100
लिखित : 70
आन्तरिक मूल्यांकन : 30
समय : 3 घण्टे

शिक्षण–अधिगम के उद्देश्य व अपेक्षित परिणाम

• उद्देश्य–

1. विद्यार्थियों को मध्यकालीन हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं प्रमुख कवियों से परिचित कराना।
2. विद्यार्थियों में दोहों एवं पदों की व्याख्या तथा काव्य–सौन्दर्य के विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
3. विद्यार्थियों को भक्ति, नीति, सामाजिक चेतना, वात्सल्य, विरह एवं शृंगार जैसे काव्य–तत्वों का ज्ञान कराना।
4. विद्यार्थियों में भारतीय सांस्कृतिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टि विकसित करना।

• अधिगम प्रतिफल–

1. विद्यार्थी मध्यकालीन हिन्दी कविता एवं प्रमुख कवियों की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी निर्धारित दोहों एवं पदों की सन्दर्भ व प्रसंग सहित व्याख्या और भावार्थ प्रस्तुत कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी विभिन्न कवियों की काव्य–विशेषताओं एवं साहित्यिक योगदान का समालोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी मध्यकालीन हिन्दी काव्य में निहित मानवीय, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को समकालीन संदर्भों से जोड़कर समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम–विभाजन

इकाई–1. कबीरदास

व्याख्या हेतु–

(क) गुरु महिमा के दोहे– • सतगुरु की महिमा अनन्त, • गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, • राम नाम के पटतरे, • पाछे लागा जाई था, • सब धरती कागद करूँ, • गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, • कबिरा ते नर अंध हैं, • यह तन विष की बेलरी, • गुरु समान दाता नहीं, • कुमति कीच चेला भरा।

(ख) नीति के दोहे– • जाति न पूछो साधु की, • साधु ऐसो चाहिये, • वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखें, • साईं इतना दीजिये, • मर जाऊँ माँगू नहीं, • पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुवा, • ऐसी वाणी बोलिये, • निंदक नियरे राखिये, • बकरी खाती पात है, • काल करै सो आज कर।

(ग) भक्ति के दोहे– • जब मैं था तब हरि नहीं, • कस्तूरी कुंडलि बसै, • ज्यों तिल माहीं तेल है, • जाके मुख माथा नहीं, • माला तो कर में फिरै, • माला फेरत जुग गया, • कांकर पाथर जोड़ि के, • दिनभर रोजा रखत हैं, • पाथर पूजे हरि मिलें, • मूँड मुँडाये हरि मिलै।

समीक्षात्मक प्रश्न–

• कबीरदास का साहित्यिक परिचय, • कबीरदास के काव्य की विशेषताएँ, • कबीरदास की सामाजिक चेतना, • कबीरदास की विद्रोह–भावना, • कबीरदास की गुरु–महिमा।

इकाई–2. सूरदास

व्याख्या हेतु–

(क) बाललीला के पद– • तेरै लाल मेरौ माखन खायौ, • मैया मैं नहिं माखन खायो, • कहन लगे मोहन मैया–मैया, • मैया कबहुँ बढ़ैगी चोटी, • मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।

(ख) विनय और भक्ति के पद– • प्रभु हौं सब पतितनि कौ टीकौ, • मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै, • तज मन हरि विमुखन कौ संग, • जा दिन मन पंछी उड़ि जैहें, • मो सम कौन कुटिल खल कामी।

(ग) भ्रमरगीत प्रसंग के पद– • मधुप तुम कहौ कहाँ ते आये हो, • गोकुल सबै गोपाल उपासी, • ऊधौ मन नाहिं दस–बीस, • निरगुन कौन देस को वासी, • जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहै, • हमारे हरि हारिल की लकरी।

समीक्षात्मक प्रश्न–

• सूरदास का साहित्यिक परिचय, • सूरदास के काव्य की प्रवृत्तियाँ, • सूरदास का वात्सल्य वर्णन, • सूरदास का विरह–वर्णन, • सूरदास के भ्रमरगीत की विशेषताएँ, • सूरदास का गीतिकाव्य।

इकाई–3. तुलसीदास

व्याख्या हेतु–

(क) राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद (रामचरितमानस के बालकांड से)– • नाथ संभुधनु भंजनिहारा, • लखन कहा हसि हमरे जाना, • बिहसि लखनु बोले मृदु बानी।

(ख) रामराज्य वर्णन (रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड से)– • दैहिक दैविक भौतिक तापा, • फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन।

(ग) राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद (कवितावली के बालकांड से)– • पुर तें निकसी रघुवीर वधू, • जल को गये लक्खनु हैं, • बनिता बनी स्यामल गौर के बीच, • सीस जटा उर बाहु बिसाल, • सुन सुन्दर बैन सुधारस–साने।

(घ) विविध भाव चित्र (कवितावली के उत्तरकाण्ड से)– • भलि भारत भूमि भले कुल जन्मु, • सो जननी सो पिता सोई भाई, • को भरिहैं हरि के रितवै, • किसबी किसान–कुल बनिक भिखारी भाट, • खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि।

समीक्षात्मक प्रश्न–

• तुलसीदास का साहित्यिक परिचय, • तुलसीदास के काव्य की प्रवृत्तियाँ, • तुलसीदास के काव्य में समन्वय भावना, • तुलसीदास के रामराज्य की विशेषताएँ, • तुलसीदास की भक्ति–भावना।

इकाई–4. बिहारी

व्याख्या हेतु–

(क) नीति के दोहे– • नर की अरु नल नीर की, • कनक कनक ते सौ गुनी, • बडे न हूजै गुननु बिनु, • समै–समै सुन्दर सबै, • जिन दिन देखे वे कुसुम, • बसै बुराई जासु तन।

(क) भक्ति के दोहे– • मेरी भववाधा हरौ, • जपमाला छापा तिलक, • जगतु जनायौ जिहिं सकलु, • तजि तीरथ हरि राधिका, • सीस मुकुट कटि काछनी, • दीरघ साँस न लेहु दुख, • बंधु भये का दीन के, • या अनुरागी चित्त की, • कब कौ टेरतु दीन रट, • कबहुँक यहि अवसर मिलै।

(ग) प्रेम और शृंगार के दोहे– • सोहत ओढ़े पीत पटु, • तौ पर बारौं उरबसी, • अंग–अंग–नग जगमगत, • पत्रा ही तिथि पाइये, • कहत नटत रीझत खिझत, • बतरस लालच लाल की, • कागद पर लिखत न बनत, • लाल तुम्हारे बिरह की, • कौन सुनै कासों कहौं।

समीक्षात्मक प्रश्न–

• कवि बिहारी का साहित्यिक परिचय, • बिहारी के काव्य की विशेषताएँ, • रीतिसिद्ध कवि बिहारी की बहुज्ञता, • बिहारी के काव्य में शृंगार वर्णन, • बिहारी का भक्ति व नीति काव्य।

आवश्यक निर्देश :– पाठ्यक्रम में दिए गए उपर्युक्त बिन्दुओं से बाहर कोई प्रश्न नहीं पूछा जाएगा।

1. **प्रश्न संख्या–1–** में पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से एक व्याख्या पूछी जाएगी। कुल 4 व्याख्याओं में से विद्यार्थियों को कोई 2 व्याख्याएँ करनी होंगी। प्रत्येक व्याख्या के 8+8 = 16 अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 200–250 शब्द)
2. **प्रश्न संख्या–2 से 5–** में पाठ्यक्रम की चारों इकाइयों से आन्तरिक विकल्प के साथ कुल 8 प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से विद्यार्थियों को प्रत्येक इकाई से 1 प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के 10+10+10+10 (कुल 40) अंक निर्धारित हैं। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 250–300 शब्द)
3. **प्रश्न संख्या–6–** पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से 2 प्रश्नों का चयन करते हुए सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 8 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को किन्हीं 7 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। कुल मिलाकर यह प्रश्न 2X7 = 14 अंकों का होगा। (उत्तरों की अधिकतम शब्द सीमा : 15–20 शब्द)

सन्दर्भ सूची–

1. कबीर ग्रंथावली– (सम्पादक) डॉ. श्यामसुन्दर दास
2. कबीर– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
3. रामचरितमानस– तुलसीदास
4. कवितावली– तुलसीदास
5. सूरसागर– सूरदास
6. भ्रमरगीत सार– सूरदास, (सम्पादक) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
7. बिहारी सतसई– बिहारी

संक्षिप्त टिप्पणी–

बी.ए. प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) के हिन्दी विषय के **'मध्यकालीन हिन्दी कविता'** प्रश्नपत्र का पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम–क्षमता एवं स्तरानुकूल अपेक्षाओं की तुलना में अपेक्षाकृत कठिन पाया गया। इस संबंध में स्नातक स्तरीय अध्ययन परिषद् के सदस्यों द्वारा अध्यक्ष महोदय का ध्यान आकर्षित किया गया। विस्तृत विचार–विमर्श के उपरांत परिषद् ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं, पाठ्यक्रम की व्यावहारिकता तथा शिक्षण–अधिगम की प्रभावशीलता को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किया जाए। फलस्वरूप संशोधित एवं स्तरानुकूल पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है, जिसे शैक्षणिक सत्र 2026–27 से लागू किए जाने की संस्तुति की गई है। इस सत्र से पूर्व के विद्यार्थियों के लिए पूर्ववर्ती पाठ्यक्रम यथावत रहेगा।